भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिये शिक्षकों की मौजूदा स्थिति और गुणवत्ता को सुधारना होगा।

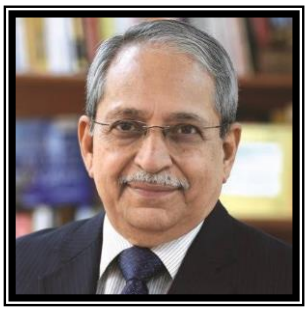

– हरिवंश चतुर्वेदी
महानिदेशक, आईआईएलएम

जब 1962 में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के दूसरे राष्ट्रपति बने तो उन्होंने खुद यह सुझाव दिया कि उन का जन्म दिवस देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाये। हर साल 5 सिंतबर को देश के लाखों स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक–दिवस बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। किन्तु जरा यह भी सोचिये कि क्या आजादी के 78 साल बाद भी हम डा. राधाकृष्णन की कल्पना के अनुरूप शिक्षकों और उनके पेशे को वह सम्मान दे पाये है, जो कि उन्हें दिया जाना चाहिये था?

क्या जब भी हम अपने किसी पुराने शिक्षक से मिलते हैं, तो क्या उन से मिलकर वैसा ही महसूस करते है जैसा कि किसी नेता, उद्योगपति, अभिनेता, डाक्टर, इंजीनियर, क्रिकेटर या किसी साधु–संत से मिलने पर अनुभव करते हैं? क्या आज शिक्षक के पेशे से युवा लोग उतने ही आकर्षित होते हैं जितना कि सीए, एमबीए, आईएएस और आईपीएस की नौकरियों से होते हैं?

अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़े फैसले में पूरे देश के सभी स्कूली शिक्षकों के प्रमोशन और सभी नई भर्तियों के लिये शिक्षक योग्यता परीक्षा (टी.ई.टी.) को अनिवार्य कर दिया है। सिर्फ 2009 से पहले भर्ती किये गये शिक्षकों और अगले 5

वर्षों में रिटायर होने वाले शिक्षकों पर यह लागू नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से यह जाहिर है कि शिक्षकों की गुणवत्ता एक अहम सवाल बन गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था सकल राष्ट्रीय उत्पादन के आधार पर दुनिया में अब तीसरे नंबर पर पहुंच गई है। अगले कुछ वर्षों में हम इस के दूसरे स्थान पर भी पहुंचने के लिये उम्मीद रखते हैं। किन्तु क्या शिक्षा व्यवस्था में बड़े गुणात्मक परिवर्तनों और सुधारों के बिना यह संभव होगा? पांचवी औद्योगिक क्रांति हमारे दरवाजे खटखटा रही है, किन्तु हमारी मौजूदा शिक्षा प्रणाली अभी भी 18वीं सदी में हुई प्रथम औद्योगिक क्रांति से पैदा हुए रोजगार के ढांचे के अनुरूप संचालित हो रही है।

पिछले एक दशक में टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में ऐसे युगान्तरकारी परिवर्तन आये हैं कि विश्वस्तर पर उद्योगों, व्यवसायों, बाजारों, समाज, शिक्षा, मीडिया और राजनीति में सब कुछ उलट–पलट रहा है। यह 'सब कुछ' इतनी तेजी से घटित हो रहा है कि कभी–कभी हमें ऐसा लगता है कि हम जॉर्ज ओरवेल के उपन्यास 1984 जैसा कोई वैज्ञानिक उपन्यास पढ़ रहे हैं या हॉलीवुड की एवेंजर जैसी कोई फिल्म देख रहे हैं। सूचना क्रांति ने दुनिया को बदलने में एक बड़ी भूमिका निभाई थी, किन्तु अब कत्रिम बुद्धि (ए.आई.) क्रांति ऐसे बड़े बड़े परिवर्तनों को ला रही है, जिनकी कोई कल्पना नहीं कर सकता।

दरअसल आज विश्व स्तर पर पांचवी औद्योगिक क्रांति के अनुरूप ''शिक्षा 5.0'' की बहुत चर्चा हो रही है जिसे मोटे तौर पर पांचवी शैक्षणिक क्रांति का नाम दिया जा सकता है। यह सत्य है कि वर्ष 2035 तक पहुंचते–पहुंचते दुनिया में शिक्षकों का पेशा खत्म नहीं होने जा रहा है किन्तु एक बात तय है कि शिक्षकों की महत्ता और भूमिका में बड़े बदलाव आयेंगे। शायद अगले दशक में शिक्षकों को डाक्टरों, वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों, प्रशासनिक अधिकारियों, अभिनेताओं और राजनेताओं के बराबर महत्व और सम्मान मिल पायेगा। सबसे बड़ा बदलाव होगा कि शिक्षा का

काम सिर्फ व्याख्यान देकर ज्ञान बांटना न हो कर, विद्यार्थियों को एक कोच, मेंटर या पथ प्रदर्शक मित्र के रूप में भविष्य का रास्ता दिखाने का भी होगा।

शिक्षक–दिवस को एक उत्सवधर्मी औपचारिकता न समझते हुए आज यह सोचने की जरूरत है कि शिक्षक होने के क्या मायने और सरोकार होते है? शिक्षक–दिवस पर हमें आज यह आत्म–विश्लेषण करना होगा कि 20वीं सदीं में जिस भारतीय समाज में सर आशुतोष मुकर्जी, डा. एस राधाकृष्णन, प्रो. वीएस झा, प्रो. केएन राज, प्रो. पीसी महलनोबिस, डा. रामास्वामी मुदालियर, डा. वीकेआरवी राव और प्रो. डीटी. लकडावाला जैसे शिक्षकों की पूजा होती थी, परन्तु आज हमारी युवा पीढ़ी क्रिकेट, फिल्म और टी.वी. के कलाकारो, एथलीटों और रातों रात अरबपति बनने वाले युवा उद्यमियों को ही अपना आदर्श क्यों समझने लगी है?

शिक्षकों के बारे में समाज की धारणा पिछले 78 वर्षों में कैसे बदल गयी, यह हमारे साहित्य और फिल्मों में शिक्षक पात्रों के चरित्र–चित्रण में भी देखा जा सकता है। 20वीं सदी के लेखकों यथा प्रेमचन्द, शरत चंद्र, बंकिम चन्द्र, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि ने अपनी रचनाओं में शिक्षकों को बहुत सकारात्मक रूप में चित्रित किया था। पिछले दशकों की फिल्मों में शिक्षकों को एक हास्यास्पद चरित्र के रूप में प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति देखी गयी है। इन फिल्मों में शिक्षक की भूमिका हास्य पैदा करने के लिये है क्योंकि वे एक सनकी, जिद्दी और तानाशाह के रूप मे कहानी में प्रवेश करते हैं और विद्यार्थी–वर्ग की मानसिकता से बिल्कुल कटे हुए हैं। बॉलीवुड की फिल्मों 'थ्री इडियटस' और मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस., में प्रिंसिपल को जिस कॉमिक चरित्र के रूप में दिखाया गया वह निश्चित रूप से पॉजीटिव नहीं था।

यह भी सच है कि सभी शिक्षक अपनी जिम्मेदारी से नहीं भागते है। शिक्षकों के एक बड़े वर्ग की दिलचस्पी पढ़ाने–लिखाने में रहती है। हमारे देश में उच्चशिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की तादाद वर्तमान में 4.5 करोड़ बताई जाती है। इन

विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिय जरूरी समुचित संसाधनों की कमी लगातार देखी गई है। उच्चशिक्षा संस्थानों में कक्षाऐं, प्रयोगशालाएं, लायब्रेरी, होस्टल, स्पोर्ट्स आदि की सुविधाएं पर्याप्त और अच्छी क्वालिटी की नहीं हैं।

देश के किसी भी कालेज या यूनिवर्सिटी कैम्पस में अगर आप जायें, तो युवा विद्यार्थियों का अक्सर हूजूम दिखाई देगा। आम तौर पर इसका कारण कक्षाएं न लगना होता है। लेकिन इस भीड़–भाड़ का एक मुख्य कारण युवा आबादी में हो रही बेतहाशा वृद्धि के साथ–साथ उच्चशिक्षा का समुचित विस्तार न होना है। कल्पना करिये कि वर्ष 2035 तक उच्चशिक्षा में विद्यार्थियों की संख्या जब मौजूदा 4.5 करोड़ से बढ़कर 8 करोड़ हो जायेगी, तो कैसा परिदृश्य होगा? विश्व के अन्य विकसित व विकासशीाल देशों की तुलना में हमारे पास शिक्षक पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। मानव संसाधन मंत्रालय की रिपोर्ट (2023) के अनुसार इस समय देश में करीब 16 लाख शिक्षक कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार राज्य विश्वविद्यालयों में 40 प्रतिशत तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में 20 प्रतिशत शिक्षकों की जगहें खाली पड़ी हुई है।

भारतीय समाज और सरकार को शिक्षकों की भूमिका का नये सिरे से मूल्यांकन करना होगा। शिक्षकों को भी आत्मालोचना करने की बडी जरूरत है। उन्हें नयी शिक्षण पद्धतियों, सूचना प्रौद्योगिकी, चौथी औद्योगिक क्रांति एवं 21वीं सदी के शिक्षाशास्त्र से प्रशिक्षित और सुसज्जित करने की जरूरत है। यह कार्य कितना कठिन है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 7वें अखिल भारतीय स्कूल शिक्षा सर्वेक्षण के अनुसार सन् 2002 में हमारे स्कूलो में 55.30 लाख शिक्षक कार्यरत थे। इनकी कुल संख्या अब करीब एक करोड़ होनी चाहिये। इसमें अगर 16 लाख कालेज व विश्वविद्यालय शिक्षकों को संख्या को जोड दिया जाये, तो देश में शिक्षकों की कुल संख्या 1.16 करोड़ हो जायेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में कहा गया है कि शिक्षक हमारे बच्चों का भविष्य बनाते हैं, इसलिये वे हमारे राष्ट्र के निर्माता हैं। शिक्षकों को उच्चस्तरीय सम्मान और जीवनस्तर फिर से दिया जाना चाहिये जिससे कि सर्वश्रेष्ठ युवा प्रतिभाओं को शिक्षक बनने के लिये प्रेरित किया जा सके।